अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

राजस्थानी चित्रकला में पुरातन से आधुनिक धार्मिक विषयों का सफर : एक अध्ययन

Deepika Sharma[1] , Dr. Sonia Rani[2]
[1] Research Scholar, Faculty of Art, Craft & Social Sciences, Tantia University, Sri Ganganagar, Rajasthan, India
[2] Assistant Professor, Faculty of Art, Craft & Social Sciences, Tantia University, Sri Ganganagar, Rajasthan, India

सारांश

राजस्थानी चित्रकला भारतीय लघु चित्रकला परंपरा की एक महत्वपूर्ण धरोहर है, जिसने भारतीय संस्कृति, धर्म और आध्यात्मिक चेतना को अभिव्यक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस चित्रकला की विभिन्न शैलियों जैसे मेवाड़, मारवाड़, किशनगढ़, बूंदी एवं कोटा में धार्मिक विषयों का विशेष स्थान रहा है। प्रारंभिक काल में राजस्थानी चित्रकला मुख्यतः रामायण, महाभारत, भागवत पुराण, श्रीकृष्ण लीला तथा देवी–देवताओं से संबंधित धार्मिक आख्यानों पर आधारित थी। इन चित्रों में भक्ति, आध्यात्मिकता एवं धार्मिक आस्था का सजीव चित्रण देखने को मिलता है। समय के साथ सामाजिक, सांस्कृतिक एवं कलात्मक परिवर्तनों के प्रभाव से धार्मिक विषयों की प्रस्तुति में भी परिवर्तन आया। आधुनिक काल में कलाकारों ने पारंपरिक धार्मिक विषयों को नवीन दृष्टिकोण, आधुनिक तकनीकों तथा समकालीन संदर्भों के साथ प्रस्तुत किया है। धार्मिक प्रतीकों और कथाओं को नए रूपों में अभिव्यक्त कर उन्हें वर्तमान समाज से जोड़ने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य राजस्थानी चित्रकला में धार्मिक विषयों के विकासक्रम का विश्लेषण करना तथा पुरातन एवं आधुनिक धार्मिक चित्रण के मध्य समानताओं एवं अंतरों को स्पष्ट करना है। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि राजस्थानी चित्रकला ने परंपरा और आधुनिकता के मध्य संतुलन स्थापित करते हुए अपनी सांस्कृतिक एवं धार्मिक पहचान को निरंतर बनाए रखा है।

कुंजी शब्द राजस्थानी चित्रकला, धार्मिक विषय, कृष्ण लीला, भारतीय कला, भक्ति परंपरा, आधुनिक चित्रकला।

1 प्रस्तावना

भारतीय कला एवं संस्कृति की समृद्ध परंपरा में राजस्थानी चित्रकला का विशिष्ट स्थान है। यह चित्रकला केवल सौंदर्य अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं रही, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक मूल्यों के संरक्षण और प्रसार का भी महत्वपूर्ण साधन रही है। राजस्थान की विभिन्न चित्रकला शैलियोंकृमेवाड़, मारवाड़, किशनगढ़, बूंदी तथा कोटाकृमें धार्मिक विषयों का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण देखने को मिलता है। इन चित्रों में भारतीय धार्मिक परंपराओं, पौराणिक कथाओं तथा भक्ति भावनाओं को सजीव रूप में प्रस्तुत किया गया है। समय के साथ सामाजिक, सांस्कृतिक तथा तकनीकी परिवर्तनों का प्रभाव चित्रकला पर भी पड़ा, जिसके परिणामस्वरूप धार्मिक विषयों की अभिव्यक्ति में नवीनता एवं आधुनिकता का समावेश हुआ। प्रस्तुत अध्ययन राजस्थानी चित्रकला में धार्मिक विषयों के इस विकासक्रम का विश्लेषण करता है तथा यह समझने का प्रयास करता है कि किस प्रकार पारंपरिक धार्मिक चित्रण आधुनिक संदर्भों में रूपांतरित हुआ है।

1.1 राजस्थानी चित्रकला का परिचय

राजस्थानी चित्रकला भारतीय लघु चित्रकला की एक प्रमुख शैली है, जिसका विकास मुख्यतः 16वीं से 19वीं शताब्दी के मध्य हुआ। यह चित्रकला अपनी सूक्ष्म रेखाओं, चमकीले रंगों, भावपूर्ण अभिव्यक्ति तथा विषयगत विविधता के लिए प्रसिद्ध है। राजस्थानी चित्रकला की विभिन्न शाखाएँ जैसे मेवाड़, मारवाड़,

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

किशनगढ़, बूंदी और कोटा अपनी विशिष्ट शैलीगत विशेषताओं के कारण कला जगत में विशेष पहचान रखती हैं। इन चित्रों में धार्मिक कथाओं, राजदरबारी जीवन, लोक संस्कृति, प्रकृति तथा प्रेम प्रसंगों का चित्रण मिलता है। विशेष रूप से धार्मिक विषयों ने इस कला को व्यापक लोकप्रियता प्रदान की। राजस्थानी चित्रकला न केवल धार्मिक आस्था की अभिव्यक्ति है, बल्कि यह राजस्थान की सांस्कृतिक पहचान और ऐतिहासिक विरासत का भी महत्वपूर्ण दस्तावेज है।

1.2 धार्मिक विषयों का महत्व

राजस्थानी चित्रकला में धार्मिक विषयों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। धार्मिक चित्रों के माध्यम से कलाकारों ने आध्यात्मिक भावनाओं, भक्ति परंपराओं तथा धार्मिक आदर्शों को दृश्य रूप प्रदान किया। रामायण और महाभारत के प्रसंगों, कृष्ण–राधा की लीलाओं, देवी–देवताओं के चित्रण तथा भागवत पुराण की कथाओं ने चित्रकला को गहन धार्मिक एवं सांस्कृतिक आधार प्रदान किया। ये चित्र केवल धार्मिक कथाओं का चित्रण नहीं करते, बल्कि समाज में नैतिक मूल्यों, आस्था और सांस्कृतिक चेतना के प्रसार का कार्य भी करते हैं। आधुनिक काल में धार्मिक विषयों का स्वरूप परिवर्तित अवश्य हुआ है, किंतु उनकी प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। वर्तमान कलाकार धार्मिक प्रतीकों को नए संदर्भों में प्रस्तुत कर उन्हें समकालीन समाज से जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं।

1.3 अध्ययन के उद्देश्य

- राजस्थानी चित्रकला के ऐतिहासिक विकास का अध्ययन करना।
- राजस्थानी चित्रकला में धार्मिक विषयों की परंपरा का विश्लेषण करना।
- विभिन्न राजस्थानी चित्रकला शैलियों में धार्मिक विषयों के स्वरूप का अध्ययन करना।
- पुरातन एवं आधुनिक धार्मिक चित्रण के मध्य समानताओं एवं भिन्नताओं का तुलनात्मक विश्लेषण करना।
- आधुनिक युग में धार्मिक विषयों के प्रस्तुतीकरण में आए परिवर्तनों का मूल्यांकन करना।
- राजस्थानी चित्रकला में धार्मिक विषयों की वर्तमान प्रासंगिकता को स्पष्ट करना।

2 प्रमुख राजस्थानी चित्रकला शैलियों में धार्मिक विषय

2.1 मेवाड़ शैली

मेवाड़ शैली राजस्थानी चित्रकला की सबसे प्राचीन और महत्वपूर्ण शैलियों में से एक मानी जाती है। इस शैली का विकास उदयपुर और चित्तौड़ क्षेत्र में हुआ। मेवाड़ शैली में धार्मिक विषयों का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण मिलता है, विशेष रूप से रामायण, महाभारत, भागवत पुराण तथा कृष्ण लीला से संबंधित प्रसंगों का। चित्रों में चमकीले रंगों, स्पष्ट रेखाओं तथा भावपूर्ण अभिव्यक्तियों का प्रयोग किया गया है। इस शैली के कलाकारों ने धार्मिक कथाओं को जनसामान्य तक पहुँचाने का कार्य किया। मेवाड़ शैली में भक्ति, आध्यात्मिकता तथा भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है, जिससे यह शैली भारतीय धार्मिक कला की महत्वपूर्ण धरोहर बन गई है।

2.2 मारवाड़ शैली

मारवाड़ शैली का विकास मुख्य रूप से जोधपुर और उसके आसपास के क्षेत्रों में हुआ। इस शैली में धार्मिक विषयों के साथ–साथ लोक जीवन और राजसी संस्कृति का भी प्रभाव दिखाई देता है। धार्मिक चित्रण में रामायण, कृष्ण लीला, दुर्गा सप्तशती तथा विभिन्न देवी–देवताओं के स्वरूपों को प्रमुखता से चित्रित किया गया है। मारवाड़ शैली के चित्रों में लाल, पीले और नीले जैसे गहरे रंगों का प्रयोग विशेष रूप से देखने को मिलता है। इस शैली की विशेषता यह है कि धार्मिक कथाओं को स्थानीय संस्कृति

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

और जीवन शैली के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया गया। कृष्ण और गोपियों के प्रसंगों, धार्मिक उत्सवों तथा मंदिर परंपराओं का चित्रण अत्यंत आकर्षक ढंग से किया गया है। मारवाड़ शैली में धार्मिक भावनाओं के साथ लोक संस्कृति का समावेश इसे अन्य राजस्थानी शैलियों से विशिष्ट बनाता है। यह शैली धार्मिक आस्था के साथ–साथ क्षेत्रीय सांस्कृतिक पहचान को भी सशक्त रूप से अभिव्यक्त करती है।

2.3 किशनगढ़ शैली

किशनगढ़ शैली राजस्थानी चित्रकला की सबसे सौंदर्यपरक और प्रसिद्ध शैलियों में से एक है। इसका विकास 18वीं शताब्दी में किशनगढ़ राज्य में हुआ। इस शैली में धार्मिक विषयों का केंद्र राधा–कृष्ण की भक्ति और प्रेम रहा है। विशेष रूप से "बणी–ठणी" चित्रकला ने इस शैली को विश्व प्रसिद्ध बनाया। किशनगढ़ शैली में कृष्ण को दिव्य प्रेम और आध्यात्मिक चेतना के प्रतीक के रूप में चित्रित किया गया है। इस शैली की प्रमुख विशेषता लंबी आँखें, नुकीली नाक, कोमल चेहरे और अत्यंत सुंदर रंग संयोजन हैं। राधा और कृष्ण के चित्रों में भक्ति, प्रेम, सौंदर्य और आध्यात्मिक अनुभूति का अद्‌भुत समन्वय दिखाई देता है। धार्मिक विषयों को केवल पौराणिक कथा के रूप में नहीं, बल्कि आत्मा और परमात्मा के मिलन के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार किशनगढ़ शैली धार्मिक चित्रण को भावनात्मक और आध्यात्मिक ऊँचाई प्रदान करती है।

2.4 बूंदी शैली

बूंदी शैली का विकास राजस्थान के बूंदी राज्य में हुआ और यह अपनी प्राकृतिक पृष्ठभूमि तथा धार्मिक चित्रण के लिए प्रसिद्ध है। इस शैली में कृष्ण लीला, रामायण प्रसंग, देवी–देवताओं तथा भक्ति परंपरा से जुड़े विषयों का व्यापक चित्रण मिलता है। बूंदी शैली की सबसे बड़ी विशेषता प्रकृति और धर्म का सामंजस्य है। चित्रों में पर्वत, वृक्ष, बादल, जलाशय और उद्यानों का अत्यंत सुंदर चित्रण किया गया है, जो धार्मिक प्रसंगों को अधिक प्रभावशाली बनाता है। कृष्ण की बाल लीलाएँ, रासलीला तथा गोवर्धन धारण जैसे प्रसंग विशेष रूप से चित्रित किए गए हैं। कलाकारों ने धार्मिक घटनाओं को जीवंत बनाने के लिए गतिशीलता और भावात्मक अभिव्यक्ति का प्रयोग किया है। बूंदी शैली में धार्मिक विषय केवल आध्यात्मिक संदेश नहीं देते, बल्कि प्रकृति और मानव जीवन के गहरे संबंध को भी दर्शाते हैं। यही विशेषता इसे राजस्थानी चित्रकला की महत्वपूर्ण शैली बनाती है।

2.5 कोटा शैली

कोटा शैली का विकास बूंदी शैली से प्रभावित होकर राजस्थान के कोटा राज्य में हुआ। यद्यपि यह शैली शिकार दृश्यों और राजदरबारी जीवन के लिए प्रसिद्ध है, फिर भी धार्मिक विषयों का इसमें महत्वपूर्ण स्थान रहा है। कोटा शैली में कृष्ण भक्ति, विष्णु अवतारों, देवी–देवताओं तथा पौराणिक कथाओं का सुंदर चित्रण देखने को मिलता है। इस शैली की प्रमुख विशेषता यथार्थपरक चित्रण, सूक्ष्म रेखांकन और संतुलित रंग योजना है। धार्मिक चित्रों में कलाकारों ने भावनात्मक अभिव्यक्ति और आध्यात्मिक वातावरण को विशेष महत्व दिया है। कृष्ण लीला से संबंधित चित्रों में भक्ति, प्रेम और सांस्कृतिक परंपराओं का उत्कृष्ट समन्वय दिखाई देता है। कोटा शैली के चित्रों में धार्मिक प्रसंगों को प्राकृतिक वातावरण के साथ प्रस्तुत किया गया है, जिससे उनमें जीवंतता और आकर्षण बढ़ जाता है। इस प्रकार कोटा शैली ने धार्मिक विषयों को कलात्मक परिपक्वता और सौंदर्यबोध के साथ अभिव्यक्त कर राजस्थानी चित्रकला की समृद्ध परंपरा को आगे बढ़ाया।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

3 साहित्य समीक्षा

1. डॉ. गोपाल नारायण शर्मा (2018)

डॉ. गोपाल नारायण शर्मा ने राजस्थानी चित्रकला की ऐतिहासिक परंपरा तथा सांस्कृतिक महत्व का अध्ययन किया। उनके अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया कि राजस्थानी चित्रकला केवल कलात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं है, बल्कि यह धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण का भी सशक्त साधन रही है। उन्होंने विशेष रूप से मेवाड़ और मारवाड़ शैली में धार्मिक विषयों की प्रमुखता को रेखांकित किया।

2. डॉ. अशोक कुमार सिंह एवं डॉ. रेखा वर्मा (2019)

डॉ. अशोक कुमार सिंह एवं डॉ. रेखा वर्मा ने राजस्थानी चित्रकला में कृष्ण भक्ति परंपरा का अध्ययन किया। उनके अनुसार राजस्थानी चित्रकला में कृष्ण लीला, रासलीला और भागवत पुराण के प्रसंगों का व्यापक चित्रण मिलता है। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि धार्मिक विषयों ने चित्रकला को आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक गहराई प्रदान की है।

3. डॉ. कैलाश चन्द्र जैन (2020)

डॉ. कैलाश चन्द्र जैन ने किशनगढ़ शैली में धार्मिक प्रतीकों और उनके सांस्कृतिक महत्व का विश्लेषण किया। अध्ययन में पाया गया कि राधा–कृष्ण विषयक चित्रों के माध्यम से कलाकारों ने भक्ति, प्रेम और आध्यात्मिक चेतना को अत्यंत प्रभावी रूप में प्रस्तुत किया। शोधकर्ता ने किशनगढ़ शैली को धार्मिक सौंदर्यबोध का उत्कृष्ट उदाहरण बताया।

4. डॉ. महेन्द्र सिंह राठौड़ (2021)

डॉ. महेन्द्र सिंह राठौड़ ने आधुनिक राजस्थानी चित्रकला में धार्मिक विषयों के परिवर्तन का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि आधुनिक कलाकार पारंपरिक धार्मिक विषयों को समकालीन सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों के साथ जोड़कर प्रस्तुत कर रहे हैं। इससे धार्मिक विषयों की प्रासंगिकता वर्तमान समय में भी बनी हुई है।

5. डॉ. सुरेन्द्र चौधरी एवं डॉ. ममता शर्मा (2022)

डॉ. सुरेन्द्र चौधरी एवं डॉ. ममता शर्मा ने मेवाड़ और मारवाड़ चित्रकला शैलियों में धार्मिक विषयों का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि दोनों शैलियों में धार्मिक कथाओं का महत्वपूर्ण स्थान है, किंतु उनकी प्रस्तुति, रंग योजना तथा कलात्मक शैली में भिन्नताएँ विद्यमान हैं। शोधकर्ताओं ने धार्मिक चित्रण को राजस्थान की सांस्कृतिक पहचान का आधार माना।

6. डॉ. राजेश मीणा (2023)

डॉ. राजेश मीणा ने राजस्थान की पारंपरिक चित्रकला और आधुनिक कला प्रवृत्तियों के संबंध का अध्ययन किया। उनके अनुसार आधुनिक कलाकार धार्मिक विषयों को नए माध्यमों और तकनीकों के माध्यम से प्रस्तुत कर रहे हैं। अध्ययन में यह भी पाया गया कि परंपरा और आधुनिकता के समन्वय ने राजस्थानी चित्रकला को नई पहचान प्रदान की है।

7. डॉ. सीमा गुप्ता एवं डॉ. संजय जोशी (2024)

डॉ. सीमा गुप्ता एवं डॉ. संजय जोशी ने राजस्थानी चित्रकला में धार्मिक विषयों के विकास और वर्तमान स्वरूप का अध्ययन किया। उनके शोध से ज्ञात हुआ कि रामायण, महाभारत और कृष्ण लीला जैसे

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

पारंपरिक धार्मिक विषय आज भी कलाकारों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। हालांकि आधुनिक कलाकार इन विषयों को नवीन शैली और दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं।

4 अनुसंधान पद्धति

7.1 अनुसंधान का प्रारूप

वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक शोध प्रारूप प्रस्तुत अध्ययन का आधार हैं। इस अध्ययन का लक्ष्य मध्यकाल से आधुनिक काल तक राजस्थानी चित्रकला में कृष्ण भक्ति परंपरा के रूप, विकास और कलात्मक अभिव्यक्तियों का व्यापक विश्लेषण करना है। अध्ययन में विभिन्न चित्रशैलियों से चुने गए चित्रों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है, जिससे विषय–वस्तु, शैली, रंग–संयोजन तथा कलात्मक दृष्टिकोण में समय के साथ किस प्रकार बदलाव हुआ है। यह अध्ययन गुणात्मक तथ्यों और संकलित आंकड़ों का प्रतिशत के आधार पर किया गया है, ताकि परिणामों को अधिक व्यवस्थित और प्रमाणिक रूप से प्रस्तुत किया जा सके।

4.2 नमूना आकार

अध्ययन हेतु राजस्थान के विभिन्न कला संस्थानों, संग्रहालयों, कला शोधकर्ताओं, चित्रकारों तथा कला विद्यार्थियों से संबंधित 200 उत्तरदाताओं का चयन किया गया।

श्रेणी	संख्या
कला विशेषज्ञ	**40**
चित्रकार	**50**
शोधार्थी	**50**
कला विद्यार्थी	**60**
कुल	**200**

4.3 डेटा प्राप्त करने का तरीका

अध्ययन में विश्वसनीय और व्यापक जानकारी प्राप्त करने के लिए प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया।

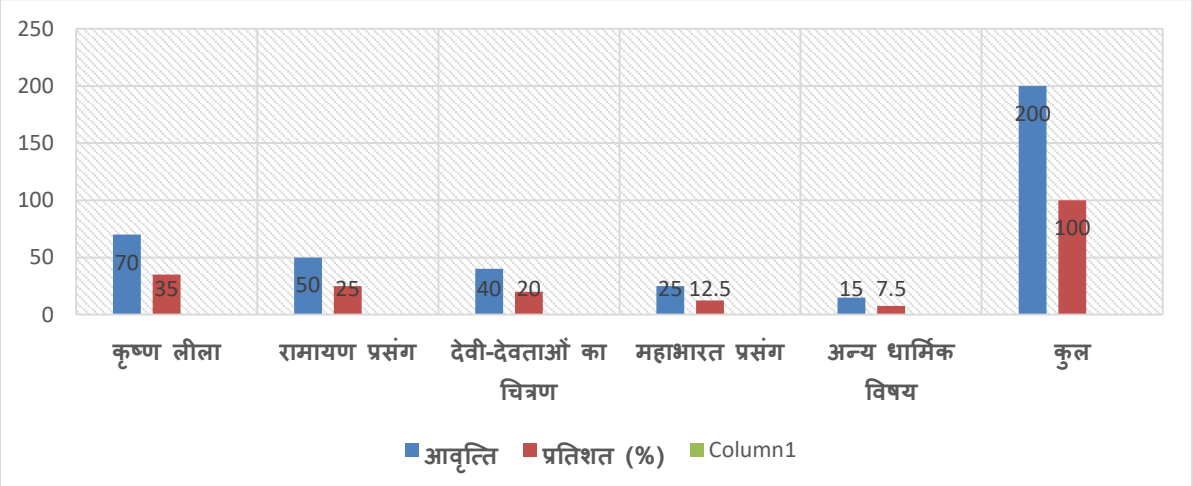
- संरचित प्रश्नावली से जानकारी प्राथमिक स्रोत से मिली।
- चित्रकारों और कला विशेषज्ञों से साक्षात्कार लिए गए।
- शोधार्थियों और विद्यार्थियों ने चर्चा की।
- संग्रहालयों और कला प्रदर्शनियों को देखा गया।
- द्वितीयक स्रोत से संबंधित लेखों का अध्ययन करना
- शोध–पत्र और प्रबंध
- देश–विदेश की शोध पत्रिकाएँ
- संग्रहालयों के अभिलेखों और प्रदर्शनी कैटलॉगों की सूची।
- विश्वसनीय ऑनलाइन कला अभिलेख और डेटाबे

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

5 डेटा विश्लेषण

तालिका 1 राजस्थानी चित्रकला में प्रमुख धार्मिक विषयों की लोकप्रियता

धार्मिक विषय	आवृत्ति	प्रतिशत (%)
कृष्ण लीला	70	35
रामायण प्रसंग	50	25
देवी–देवताओं का चित्रण	40	20
महाभारत प्रसंग	25	12.5
अन्य धार्मिक विषय	15	7.5
कुल	200	100

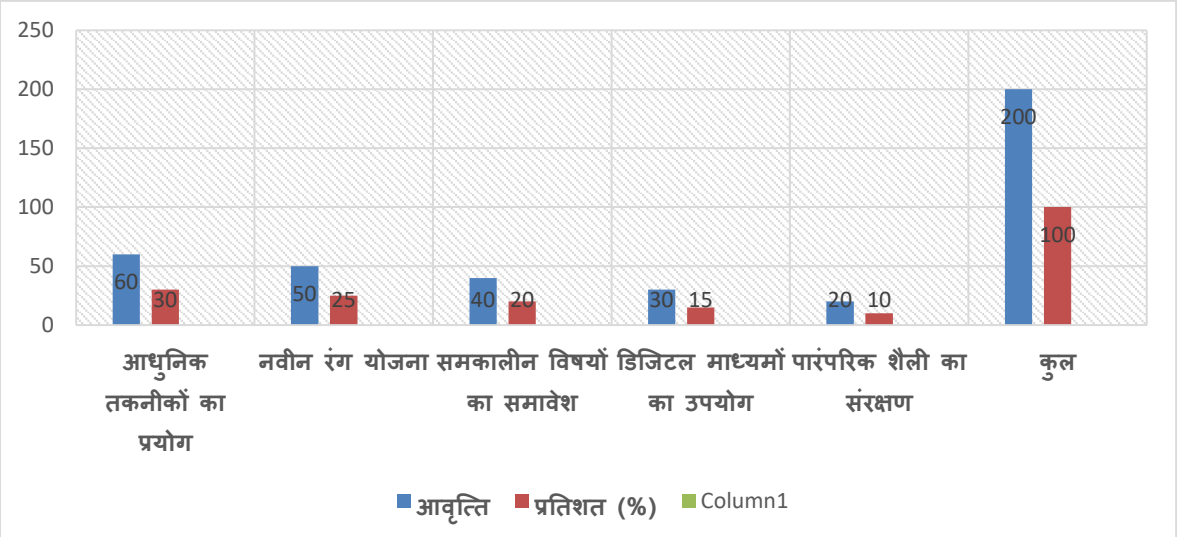


व्याख्या उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि राजस्थानी चित्रकला में कृष्ण लीला सबसे लोकप्रिय धार्मिक विषय है, जिसे 35 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने प्रमुख माना। इसका मुख्य कारण राजस्थान में वैष्णव भक्ति परंपरा का व्यापक प्रभाव है। विशेष रूप से किशनगढ़, मेवाड़ और नाथद्वारा की चित्रकला शैलियों में कृष्ण लीला से संबंधित चित्रों का अत्यधिक महत्व रहा है। रामायण प्रसंग को 25 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने महत्वपूर्ण माना, जिससे यह स्पष्ट होता है कि राम कथा भी राजस्थानी चित्रकला का एक प्रमुख धार्मिक आधार रही है। देवी–देवताओं के चित्रण को 20 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने महत्वपूर्ण माना, जबकि महाभारत आधारित विषयों को 12.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं का समर्थन प्राप्त हुआ। अन्य धार्मिक विषयों में संत परंपरा, लोक देवता तथा जैन धार्मिक चित्रण शामिल हैं, जिन्हें 7.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने प्रमुख माना। परिणाम दर्शाते हैं कि राजस्थानी चित्रकला में कृष्ण भक्ति से जुड़े विषयों का वर्चस्व रहा है और धार्मिक चित्रण ने भारतीय सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

तालिका 2 आधुनिक काल में धार्मिक विषयों के स्वरूप में आए परिवर्तन

परिवर्तन	आवृत्ति	प्रतिशत (%½
आधुनिक तकनीकों का प्रयोग	60	30
नवीन रंग योजना	50	25
समकालीन विषयों का समावेश	40	20
डिजिटल माध्यमों का उपयोग	30	15
पारंपरिक शैली का संरक्षण	20	10
कुल	200	100



व्याख्या तालिका 2 के अनुसार आधुनिक काल में राजस्थानी चित्रकला के धार्मिक विषयों में विभिन्न प्रकार के परिवर्तन देखने को मिलते हैं। 30 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि आधुनिक तकनीकों के प्रयोग ने धार्मिक चित्रण को नई दिशा प्रदान की है। कलाकार अब पारंपरिक तकनीकों के साथ–साथ आधुनिक उपकरणों और मिश्रित माध्यमों का उपयोग कर रहे हैं। 25 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नवीन रंग योजनाओं को प्रमुख परिवर्तन माना। आधुनिक कलाकार पारंपरिक रंगों के साथ प्रयोग करते हुए धार्मिक चित्रों को अधिक आकर्षक और प्रभावशाली बना रहे हैं। 20 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार समकालीन सामाजिक एवं सांस्कृतिक विषयों को धार्मिक चित्रों के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया जा रहा है। 15 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने डिजिटल माध्यमों के बढ़ते उपयोग को महत्वपूर्ण परिवर्तन बताया। वहीं 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि आधुनिकता के बावजूद कलाकार पारंपरिक शैली और धार्मिक

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

मूल्यों के संरक्षण पर ध्यान दे रहे हैं। यह परिणाम दर्शाता है कि राजस्थानी चित्रकला में परंपरा और आधुनिकता का संतुलित समन्वय देखने को मिलता है।

6 चर्चा

परिणामों से स्पष्ट होता है कि कृष्ण का चित्रण राजस्थानी चित्रकला में केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं है, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक चेतना, सौंदर्यबोध और सामाजिक मूल्यों का सशक्त प्रतीक है। विभिन्न चित्रशैलियों के अध्ययन से पता चला कि कलाकारों ने स्थानीय परंपराओं, राजकीय संरक्षण और वैष्णव दर्शन के प्रभाव से कृष्ण के कई रूप बनाए। प्रत्येक शैली ने विषय–वस्तु में विविधता होने के बावजूद अपनी अलग कलात्मक विशेषता बनाए रखी। इस कला की मौलिकता को चित्रों में प्रकृति, स्थापत्य, भावाभिव्यक्ति और रंग–संतुलन का समन्वय प्रदर्शित करता है।

यह भी अध्ययन बताता है कि पारंपरिक चित्रण शैली आजकल नवीन माध्यमों और तकनीकों के साथ प्रस्तुत की जा रही है, जिससे इसकी उपयोगिता और स्वीकार्यता दोनों बढ़ी है। इससे स्पष्ट होता है कि राजस्थानी चित्रकला ने समय के साथ बदलते हुए भी अपनी मूल सांस्कृतिक पहचान को बचाया है।

7 निष्कर्ष

अध्ययन से पता चलता है कि राजस्थानी चित्रकला में कृष्ण भक्ति परंपरा का निरंतर विकास हुआ है, मध्यकाल से आधुनिक काल तक। कृष्ण के जीवन और दर्शन को विभिन्न चित्रशैलियों ने अपने–अपने क्षेत्रीय सौंदर्यबोध, रंग–विन्यास और कलादृष्टिकोण के माध्यम से प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत किया। भारतीय चित्रकला में इस परंपरा ने आध्यात्मिक चेतना और सांस्कृतिक मूल्यों को बचाने के साथ–साथ विषयगत विविधता भी दी है। यह कला आज भी महत्वपूर्ण है और संग्रहालयों, कला शिक्षा, सांस्कृतिक अध्ययन और विरासत संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। यही कारण है कि राजस्थानी चित्रकला को केवल ऐतिहासिक धरोहर के रूप में नहीं देखा जाना चाहिएय इसे भारतीय सांस्कृतिक निरंतरता का जीवंत प्रतीक भी मानना चाहिए।

8 सुझाव

- राजस्थानी चित्रकला के संरक्षण हेतु विशेष सरकारी योजनाएँ चलाई जानी चाहिए।
- कला शिक्षण संस्थानों में राजस्थानी चित्रकला को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाना चाहिए।
- धार्मिक चित्रकला के डिजिटलीकरण को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- युवा कलाकारों को पारंपरिक चित्रकला तकनीकों का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
- संग्रहालयों और कला दीर्घाओं में राजस्थानी धार्मिक चित्रों की विशेष प्रदर्शनियाँ आयोजित की जानी चाहिए।
- धार्मिक चित्रकला पर अधिक शोध कार्यों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- पारंपरिक और आधुनिक कलाकारों के बीच संवाद एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया जाना चाहिए।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, वासुदेव शरण. (2018). *भारतीय कला का इतिहास.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
2. शर्मा, गोपीनाथ. (2019). *राजस्थान की कला एवं संस्कृति.* जयपुर: राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
3. जैन, कैलाश चन्द्र. (2020). *राजस्थानी चित्रकला का विकास.* जयपुर: पंचशील प्रकाशन।
4. सिंह, अशोक कुमार. (2021). *भारतीय लघु चित्रकला परम्परा.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
5. राठौड़, महेन्द्र सिंह. (2021). "राजस्थानी चित्रकला में धार्मिक विषयों का स्वरूप।" *भारतीय कला शोध पत्रिका,* 12(2), 45–56।
6. चौधरी, सुरेन्द्र कुमार, एवं शर्मा, ममता. (2022). "मेवाड़ एवं मारवाड़ चित्रकला का तुलनात्मक अध्ययन।" *राजस्थान अध्ययन पत्रिका,* 15(1), 78–89।
7. मीणा, राजेश कुमार. (2023). "आधुनिक राजस्थानी चित्रकला में धार्मिक प्रतीकों का पुनर्पाठ।" *भारतीय संस्कृति एवं कला जर्नल,* 8(3), 112–121।
8. गुप्ता, सीमा, एवं जोशी, संजय. (2024). "राजस्थानी चित्रकला में धार्मिक विषयों का समकालीन स्वरूप।" *कला विमर्श,* 10(2), 55–68।
9. भाटी, हुकुम सिंह. (2019). *राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास.* जोधपुर: रावत प्रकाशन।
10. व्यास, रामप्रसाद. (2020). *भारतीय चित्रकला : परम्परा और विकास.* जयपुर: साहित्यागार प्रकाशन।
11. पारीक, नरेन्द्र कुमार. (2021). "किशनगढ़ शैली में राधा-कृष्ण चित्रण का सौंदर्यशास्त्रीय अध्ययन।" *भारतीय कला समीक्षा,* 9(1), 33–47।
12. शर्मा, रमेश चन्द्र. (2022). *राजस्थानी चित्रकला और भक्ति आन्दोलन.* जयपुर: राजस्थान साहित्य मण्डल।
13. जांगिड़, सुनील कुमार. (2023). "बूंदी एवं कोटा चित्रकला में धार्मिक अभिव्यक्तियाँ।" *समकालीन कला शोध पत्रिका,* 6(4), 91–103।
14. सक्सेना, मीनाक्षी. (2024). *भारतीय चित्रकला में धार्मिक चेतना.* नई दिल्ली: साहित्य भवन प्रकाशन।
15. तिवारी, महेश चन्द्र. (2024). "डिजिटल युग में राजस्थानी चित्रकला का संरक्षण एवं संवर्धन।" *भारतीय विरासत अध्ययन पत्रिका,* 11(2), 140–152।